दिल्ली क्यों तरसे

बारिश का पानी ही राजधानी का सहारा

हर साल बरसात के दौरान यमुना में 5 से 6 लाख क्यूसेक पानी आता है जो यूं ही बहकर बेकार हो जाता है। अगर इस पानी को स्टोर करने का इंतजाम हो जाए तो कम से कम 3 से 4 महीने तक दिल्ली को पानी के लिए किसी और राज्य का मोहताज नहीं होना पड़ेगा। यही नहीं, इस पानी से साउथ वेस्ट दिल्ली के ग्राउंड वॉटर लेवल को भी बढ़ाने में भी मदद मिलेगी :

यमुना के साथ बनेंगे चैनल तो बचेगा पानी

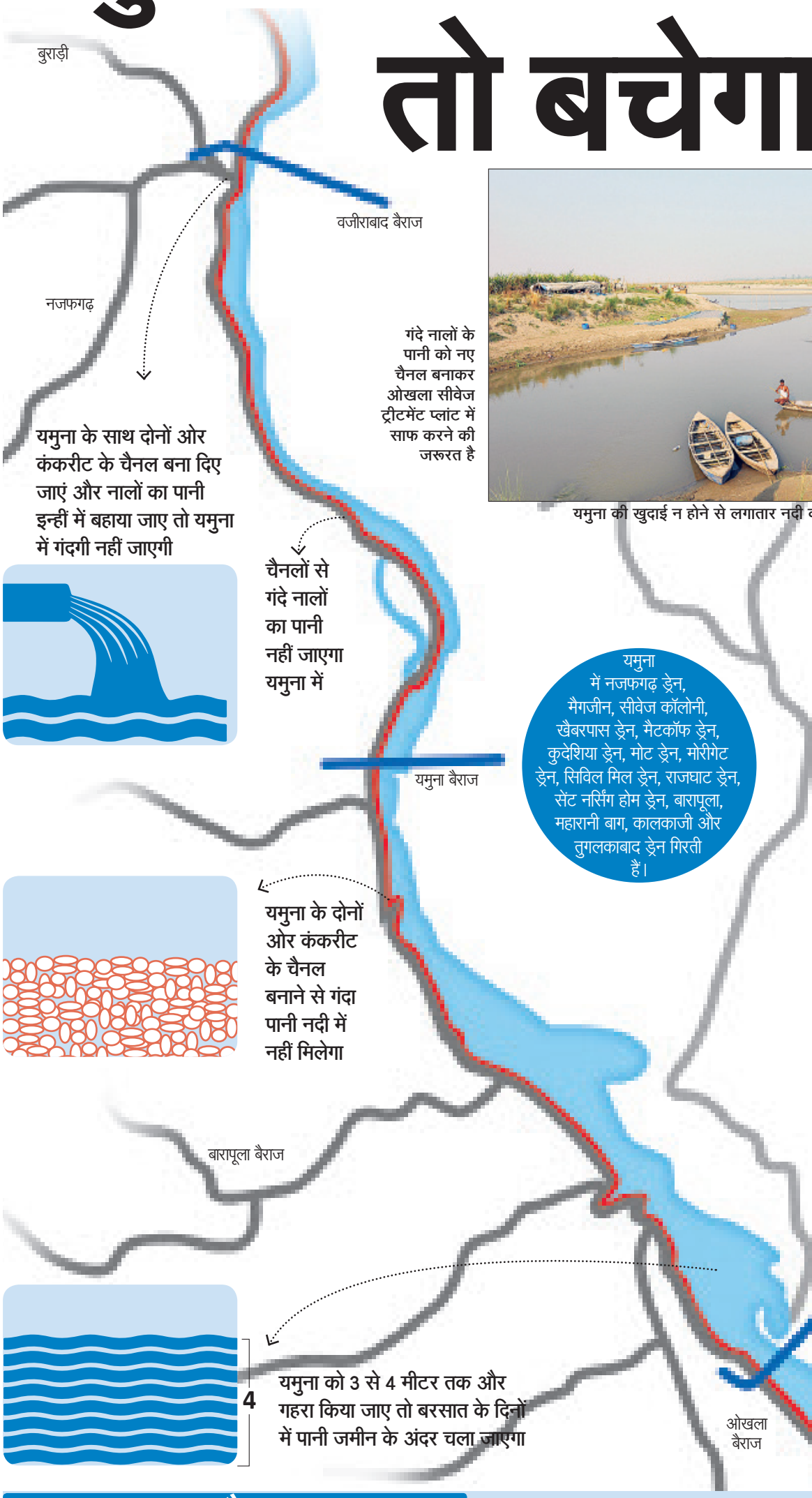

गंदे नालों के पानी को नए चैनल बनाकर ओखला सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट में साफ करने की जरूरत है

File Photo

यमुना की खुदाई न होने से लगातार नदी का लेवल ऊंचा होता जा रहा है

Veerendra.Kumar@timesgroup.com

■ **नई दिल्ली :** पानी के लिए परेशान दिल्ली की प्यास यमुना को गहरा कर बुझाई जा सकती है। अगर यमुना के दोनों किनारों पर वजीराबाद से लेकर ओखला तक कंकरीट के चैनल बना दिए जाएं और गंदे नालों के पानी को इसमें जमा कर ओखला सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट में साफ किया जाए तो यमुना गंदी नहीं होगी। नब्बे के दशक में इस तरह का एक प्लान तैयार भी किया गया था। इसे पीएमओ तक से मंजूरी मिली थी लेकिन अब तक इस प्लान पर कोई कार्रवाई नहीं हुई।

यमुना को गहरा करने का प्लान

डीडीए के पूर्व कमिश्नर (प्लानिंग) आरजी गुप्ता के मुताबिक पल्ला से लेकर ओखला तक यमुना की लंबाई लगभग 50 किलोमीटर है। यमुना कहीं डेढ़ किलोमीटर तो कहीं तीन किलोमीटर तक चौड़ी है। दिल्ली में यमुना का एरिया तकरीबन 97 वर्ग किलोमीटर है। इसमें 16.45 वर्ग किलोमीटर एरिया में पानी बहता है। अगर यमुना को 3 से 4 मीटर तक और गहरा कर दिया जाए तो बरसात के दिनों में आसानी से पानी जमीन के अंदर चला जाएगा। इससे यमुना का बहाव भी बना रहेगा। जब दिल्ली को जरूरत पड़ेगी तो पानी भी मिल जाएगा। यमुना की खुदाई न होने से लगातार उसका लेवल ऊंचा होता जा रहा है।

ठीक होगी पानी की क्वॉलिटी

पूर्व कमिश्नर के मुताबिक अभी सिर्फ वजीराबाद बैराज तक ही पानी साफ रहता है। यमुना में सारे नाले वजीराबाद बैराज के बाद गिरते हैं। नदी में दिल्ली के इलाके में करीब 17 नाले गिरते हैं। अगर वजीराबाद बैराज के बाद से ओखला तक यमुना के साथ दोनों ओर कंकरीट के चैनल बना दिए जाएं और नालों का पानी इन्हीं में बहाया जाए तो यमुना में गंदगी नहीं जाएगी। दोनों चैनल के गंदे पानी को साफ करने के लिए ओखला में 300 एमजीडी का सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाया जाए। पानी को साफ कर इसे फिर से यमुना में डाल दिया जाए। यमुना में नजफगढ़ ड्रेन, मैगजीन, सीवेज कॉलोनी, खैबरपास ड्रेन, मैटकॉफ ड्रेन, कुदेशिया ड्रेन, मोट ड्रेन, मोरीगेट ड्रेन, सिविल मिल ड्रेन, राजघाट ड्रेन, सेंट नर्सिंग होम ड्रेन, बारापूला, महारानी बाग, कालकाजी और तुगलकाबाद ड्रेन गिरती हैं। चैनल बनने से ये ड्रेन यमुना में नहीं गिर पाएंगे।

क्या है प्लान

■ बाढ़ के पानी को स्टोर करने के लिए पल्ला से लेकर ओखला तक आउटर और साउथ वेस्ट दिल्ली में एक नहर बना दी जाए।

■ इससे ग्राउंड वॉटर लेवल भी रीजार्च होगा और पानी की भी किल्लत दूर हो जाएगी।

■ इस पानी से 5 वॉटर ट्रीटमेंट प्लांटों पानी मिल सकता है।

■ नहर में जगह-जगह करीब 100 इंजेक्शन वेल बनाए जाएं। इन इंजेक्शन वेल के जरिए पानी जमीन के अंदर छोड़ा जाएगा।

■ पूरे साउथ-वेस्ट दिल्ली में ग्राउंड वॉटर लेवल कम है इससे वहां ग्राउंड वॉटर रीचार्ज भी होगा।

ओपन रहेंगे नाले

नाले की ऊंचाई तीन मीटर और बेस दो मीटर का रखा जाए। यह प्रस्ताव डीडीए ने 1991 में तैयार किया था। 1992 में इसे पीएमओ तक ने मंजूरी दे दी थी। यमुना के इन प्रोजेक्ट के लिए 2800 करोड़ के बजट की जरूरत थी। इसके बाद से इस प्रस्ताव पर कोई काम नहीं हुआ। हालांकि यमुना में गंदगी न जाए, इसके लिए दिल्ली जल बोर्ड इंटरसेप्टर स्कीम पर काम कर रहा है। इसका दो तिहाई से ज्यादा काम पूरा हो चुका है।

यमुना के नॉर्थ में बैराज

यह भी प्रस्ताव तैयार किया गया था कि वजीराबाद बैराज के नॉर्थ में 8 किलोमीटर ऊपर एक बैराज बना दिया जाए। यमुना के राइट और लेफ्ट साइड में मार्जिनल बांध हैं। यहां यमुना में करीब 4 मीटर तक खुदाई की जाए। यहां पर बैराज बनाने के लिए 1645 हेक्टेयर एरिया है। यहां पर यमुना में पानी की मात्रा डेढ़ से दो मीटर तक नीचे मौजूद है। जब यहां बैराज बन जाएगा तो बारिश का 60 फीसदी पानी जमीन के अंदर चला जाएगा। बाकी का 40 फीसदी यानी 22.55 लाख क्यूबिक मीटर पानी ऊपर रहेगा।

'रोकी जाए पानी की बर्बादी'

दिल्ली यूनिवर्सिटी के पास कमला नेहरू पार्क में मीठे सोते की कोई सुध लेने वाला नहीं है। इसी तरह वजीराबाद से लेकर जहांगीरपुरी तक फैली भलस्वा झील भी सूखकर अपनी किस्मत पर रो रही है। करोड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी उसका डिवेलपमेंट नहीं हो सका है। **-दिलबर सिंह नेगी**

लोगों को ध्यान देना चाहिए कि पानी कम वेस्ट हो, खासकर गर्मी के मौसम में। वॉटर फिल्टर और एसी ड्रेन पाइप से निकलने वाले पानी को घर व ऑफिस के कई कामों मे री-यूज कर सकते हैं। हर सोसाइटी में रेन वॉटर हारवेस्टिंग को लागू किया जाना चाहिए। **- दीपक सहरावत**

पानी के खराब पड़े मीटरों को बदलने के साथ-साथ यह भी देखना चाहिए कि पानी का कोई भी अवैध कनेक्शन ना चल रहा हो। सरकार को सभी कनेक्शनों पर वॉटर टैंक ओवरफ्लो सिस्टम लगवाना जरूरी करना चाहिए ताकि टंकी भरने के बाद पानी की बर्बादी को रोका जा सके। **- अनिल कुमार माथुर**

सबसे पहले तो दिल्ली सरकार को यह कोशिश करनी होगी कि हर घर तक पानी की लाइन पहुंचे। दिल्ली जल बोर्ड के टैंकर्स के पीछे लिखा होता है कि जल की हर बूंद कीमती है, इसे बेकार न करें। हालांकि जब यही टैंकर सड़कों पर चलते हैं तो कई लीटर पानी गिराते हुए जाते हैं । वहीं सरकार के साथ-साथ सभी दिल्लीवालों को भी वॉटर कन्जरवेशन के लिए जागरूक होना होगा। **-प्रदीप सिंघल**

लोगों को अपने पानी टंकी में अलार्म लगाने के लिए अवेयर किया जाना चाहिए। ज्यादातर पानी की बर्बादी मोटर के ज्यादा चलने की वजह से होती है। यह लगभग हर घर की समस्या है। साथ ही लोगों को पानी बचाने के दूसरे तरीकों से भी अवेयर करना चाहिए। न्यूजपेपर और टीवी के जरिए वॉटर कन्जरवेशन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। **- श्वेता नथानी**

हर दिन बेकार बह जाने वाले सीवर के पानी को रिज एरिया में इकट्ठा कर साफ करके टूरिस्ट स्पॉट के रूप में डिवेलप किया जाना चाहिए। इस पानी से दिल्ली रिज एरिया के आसपास का ग्राउंड वॉटर लेवल बढ़ेगा। रेन वॉटर को भी दिल्ली के रिज एरिया में रोकने की कोशिश होनी चाहिए। **-शिव प्रताप यादव**

भेजें अपनी राय

क्यों होना चाहिए दिल्ली को पानी के मामले में आत्मनिर्भर, कितना फायदा होगा दिल्ली को इस प्रोजेक्ट से, पानी की कमी से छुटकारा पाने के लिए दिल्ली को और क्या करना चाहिए? आप भी भेजें हमें अपनी राय और सुझाव, हम इन्हें सरकार के सामने रखेंगे।

कैसे भेजें :

nbtdilli@gmail.com पर मेल करें और सब्जेक्ट में लिखें

Water

ट्विटर पर भी भेज सकते हैं सुझाव

इसके लिए हमारे ट्विटर हैंडल @NBTDilli को टैग करें और हैशटैग #DilliKyunTarse का इस्तेमाल करें।